।। सद्योवर्षणाध्यायः ।।

वर्षा प्रश्न का विचार

वर्षाप्रश्ने सलिलनिलयं राशिमाश्रित्य चन्द्रो
लग्नं यातो भवति यदि वा केन्द्रगः शुक्लपक्षे।
सौम्यैर्दृष्टः प्रचुरमुदकं पापदृष्टोऽल्पमम्भः
प्रावृट्काले सृजति न चिराच्चन्द्रवद्भार्गवोऽपि।। 1।।

(i) वर्षा होगी या नही ? ऐसा प्रश्न हो तो 4. 10. 12 लग्न में चन्द्रमा या शुक्र स्थित हो। यह एक योग है।

(ii) शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा या शुक्र केन्द्र में कहीं भी जलचर राशि में हो अर्थात् कृष्ण पक्ष में लग्नगत होने पर व शुक्ल पक्ष में 4.7.10 में जल चर राशि गत हो यह दूसरा योग है।

इन दोनों योगों में से कोई भी प्रश्न लग्न में बनता हो तो वर्षा काल में शीघ्र ही वर्षा होगी।

उक्त योग कारक चन्द्रमा यदि शुभ दृष्ट हो तो खूब पानी व पाप दृष्ट हो तो कम पानी गिरता है।

इन्हीं दोनों योगों को प्रश्न लग्न में शुक्र से भी यथावत् देखना चाहिए। समास संहिता में कहा गया है।

वर्षाप्रश्ने प्रावृषि जलराशौ कण्टके शशी बलवान्।
भृगुजो वा शुभदृष्टो बहुजलकृत् स्वल्पदः पापैः।। (वराह)

Scanned with CamScanner

चेष्टा से प्रश्न विचार :

आर्द्रं द्रव्यं स्पृशति यदि वा वारि तत्संज्ञकं वा
तोयासन्नो भवति यदि वा तोयकार्योन्मुखो वा।
प्रष्टा वाच्यः सलिलमचिरादस्ति निःसंशयेन
पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते यत्र शब्दः।। 2।।

वर्षा प्रश्न करते समय पृच्छक यदि जल का स्पर्श करे या गीली वस्तु का स्पर्श करे या सरस वस्तु का स्पर्श करे तथा जल सम्बन्धित किसी भी पदार्थ का स्पर्श करे। अर्थात् दूध, दही, पानी, गीला वस्त्र, गीले हाथ, मोती, मूँगा, कमल, हरे पत्ते या टहनी या पौधा, शंख आदि का स्पर्श करे। शेष सब चीजों का स्वविवेक से निर्णय करें। अथवा पानी के पास में खड़े हो कर या बैठकर प्रश्न करे। अथवा जल कार्य (स्नान, कपड़े धोना, फर्श धोना, पौंछना आदि) करने के लिए उद्यत हो तो इन सब चेष्टाओं से वर्षा काल में बहुत उत्तम वर्षा होती है।

ये चेष्टाएँ पृच्छक के विषय में ही विचारणीय हैं। जल सम्बन्धी चीजों को देखने, छूने, सुनने या कहने से भी उक्त फल कहना चाहिए। समास संहिता में कहा गया है।

आर्द्रं द्रव्यं सलिलं जलसंज्ञशब्दादर्शनान्यथवा।। (वराहमिहिर)

लक्षणों द्वारा वर्षा ज्ञान :

उदयशिखरिसंस्थो दुर्निरीक्ष्योऽतिदीप्त्या
द्रुतकनकनिकाशः स्निग्धवैदूर्यकान्तिः।
तदहनि कुरुतेऽम्भस्तोयकाले विवस्वान्
प्रतपति यदि चोच्चैः खं गतोऽतीव तीक्ष्णम्।। 3।।

सूर्य, उदय के समय ही इतना तेज हो कि देखा न जा सके। पलाए गए सोने के समान रंग वाला हो, चमकीली वैदूर्य मणि (कोई चमकीला रत्न) के समान हो तो वर्षाकाल में उसी दिन वर्षा का योग बनता है।

इसी तरह दोपहर में आकाश मध्य में स्थित होता हुआ सूर्य, बहुत तेज चमकता हो और तपे तो भी उसी दिन वर्षा होती है।

Scanned with CamScanner

शकुनों से वर्षा ज्ञान :

विरसमुदकं गोनेत्राभं वियद्विमला दिशो
लवणविकृतिः काकाण्डाभं यदा च भवेन्नभः।
पवनविगमः पोप्लूयन्ते झषाः स्थलगामिनो
रसनमसकृन्मण्डूकानां जलागमहेतवः।। 4।।

पानी का स्वाद बदल जाना, गाय की आँखों के समान मटमैला आकाश, साफ दिशाएँ, नमक का पसीजना, आकाश की रंगत कौए के अण्डे के समान सलेटी हो, हवा बिल्कुल न चले, मछलियाँ पानी से बाहर निकल कर सूखे में चलने का प्रयत्न करें व मेंढ़क रह रह कर आवाज करते हों तो ये सब बातें वर्षा की सूचना देती हैं। अर्थात् जल्दी ही वर्षा होती है।

मार्जारा भृशमवनिं नखैर्लिखन्तो लोहानां मलनिचयः सविस्रगन्धः।
रथ्यायां शिशुरचिताश्च सेतुबन्धाः सम्प्राप्तं जलमचिरान्निवेदयन्ति।। 5।।

बिल्ली अपने पंजों से धरती नोंचे। लोहे या कांसे के बर्तनों पर काला पन आ जाए, इन बर्तनों में से कुछ अलग प्रकार की गन्ध आने लगे। बच्चे गलियों में पुल, पानी, आदि का खेल खेलें अथवा बालकों द्वारा बनाए गए पानी से सम्बन्धित पदार्थ गलियों में दिखें तो शीघ्र ही वर्षा होती है।

गिरयोऽञ्जनचूर्णसन्निभा यदि वा बाष्पनिरुद्धकन्दराः।
कृकवाकुविलोचनोपमाः परिवेषाः शशिनश्च वृष्टिदाः।। 6।।

पहाड़ों का रंग दूर से काला दिखे, पहाड़ों पर भाप सी उठती दिखे। चन्द्रमा के चारों ओर परिवेष (कुण्डल) दिखे व कुण्डल का रंग लाल हो। ये सब लक्षण व शकुन शीघ्र ही वर्षादायक होते हैं।

विनोपघातेन पिपीलिकानामण्डोपसंक्रान्तिरहिव्यवायः।
द्रुमावरोहश्च भुजङ्गमानां वृष्टेर्निमित्तानि गवां प्लुतं च।। 7।।

चींटियां बिना किसी उपद्रव के अपने अण्डे लेकर दूसरे स्थान पर जाने लगें। साँप पेड़ पर चढ़ने लगे व गाएँ बिना कारण के ही उछलने लगें तो शीघ्र वर्षा का शकुन होता है।

Scanned with CamScanner

इन शकुनों का उल्लेख घाघ ने भी किया है, यह ऊपर के उद्धरण से स्पष्ट है। चिड़ियां धूल में नहाने का अभिनय करें तो भी वर्षा की सूचना समझें।

तरुशिखरोपगताः कृकलासा गगनतलस्थितदृष्टिनिपाताः।
यदि च गवां रविवीक्षणमूर्ध्वं निपतति वारि तदा न चिरेण।। 8।।

गिरगिट पेड़ों की चोटियों तक पहुँच जाए और आकाश की ओर देखें। गाय या बैल सूर्य की ओर देखें तो शीघ्र ही वर्षा होती है।

नेच्छन्ति विनिर्गमं गृहाद्धुन्वन्ति श्रवणान् खुरानपि।
पशवः पशुवच्च कुक्कुरा यद्यम्भः पततीति निर्दिशेत्।। 9।।

यदि पशु घर से बाहर जाने में आना कानी करें, बिना कारण के ही पैरों को हिलाएं व कानों को फड़फड़ाएं और कुत्ते भी इसी तरह कान फड़फड़ाएं, पैर नचाएं व घर से बाहर न निकलें तो शीघ्र वर्षा का शकुन होता है।

यदा स्थिता गृहपटलेषु कुक्कुरा रुदन्ति वा यदि विततं वियन्मुखाः।
दिवा तडिद्यदि च पिनाकिदिग्भवा तदा क्षमा भवति समैव वारिणा।। 10।।

यदि कुत्ते घर की छतों पर चढ़ जाएं अथवा आकाश की ओर खुले मुँह से देखें या आकाश की ओर मुँह करके रोएँ, यदि दिन में ईशान कोण में बिजली चमके तो भी उत्तम वर्षा की पूर्व सूचना समझनी चाहिए।

शुककपोतविलोचनसन्निभो मधुनिभश्च यदा हिमदीधितिः।
प्रतिशशी च चदा दिवि राजते पतति वारि तदा न चिरेण च।। 11।।

यदि आसमान में तोते व कबूतर की आँखों के समान लाल बादल हों, चन्द्रमा का रंग शहद के समान दिखे, आकाश में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब प्रतिशशी दिखे तो शीघ्र ही वर्षा होती है।

स्तनितं निशि विद्युतो दिवा रुधिरनिभा यदि दण्डवत्स्थिताः।
पवनः पुरतश्च शीतलो यदि सलिलस्य तदाऽऽगमो भवेत्।। 12।।

रात में बादल गरजें, दिन में बिजली चमके, बिजली की स्थिति लम्बवत् (Vertical) हो। पूर्वी हवा ठंडी चले तो शीघ्र ही वर्षा होती हैं।

पुरवाई बहुतै बहै विधवा पान चबाय।
ऊलै आवै नीर को ई काहूँ संग जाय।।
सावन मास बहै पुरवाई। बरदा बेचि बिसा हो गाई।। (घाघ)

Scanned with CamScanner

घाघ ने सावन मास की पुरवाई हवा को वर्षा का नाशक कहा है। अन्य मासों में पुरवाई वर्षा कारक होती है। यहाँ गर्म पूर्वी हवा को वर्षा नाशक समझना चाहिए।

वल्लीनां गगनतलोन्मुखाः प्रवालाः स्नायन्ते यदि जलपांशुभिर्विहङ्गाः।
सेवन्ते यदि च सरीसृपास्तृणाग्राण्यासन्नो भवति तदा जलस्य पातः।। 13।।

लताओं के पत्तों की नोंक आकाश की ओर उठ जाए, पक्षी धूल में स्नान करने लगें, पत्तियों पर सरकने वाले कृमि रेंगने लगें तो शीघ्र ही वर्षा होती है।

मयूरशुकचाषचातकसमानवर्णा यदा
जपाकुसुमपङ्कजद्युतिमुषश्च सन्ध्याघनाः।
जलोर्मिनगनक्रकच्छपवराहमीनोपमाः
प्रभूतपुटसंचया न तु चिरेण यच्छन्त्यपः।। 14।।

मोर, चातक व तोते के रंग के बादल सायंकाल में छा जाएं अर्थात् साधारण काले बादल हों तो शीघ्र वर्षा होती है।

जवा कुसुम बहुत लाल हो जाएं, बादलों की आकृति सूअर, पानी की भंवर, लहर, कछुआ, मछली के समान हों तथा घने हों तो शीघ्र वर्षा कारक होते हैं।

काला बादल जी डरवावै। भूरा बादल पानी लावै। (घाघ)

पर्यन्तेषु सुधाशशाङ्कधवला मध्येऽञ्जनालित्विषः
स्निग्धा नैकपुटाः क्षरज्जलकणाः सोपानविच्छेदिनः।
माहेन्द्रीप्रभवाः प्रयान्त्यपरतः प्राग् वाम्बुपाशोद्भवा
ये ते वारिमुचस्त्यजन्ति न चिरादम्भः प्रभूतं भुवि। 15।।

बादलों का रंग सब तरफ से भूरा हो तथा बीच में गहरा रंग दिखे, बादलों की कई परतें हों, चिकनापन हो, सीढ़ीनुमा बादल हों, पानी की बूंदें टपकें और पूर्व से पश्चिम की ओर चल रहे हों अथवा पश्चिम से चलकर पूर्व की ओर जा रहे हों तो शीघ्र वर्षा देते हैं।

शक्रचापपरिघप्रतिसूर्या रोहितोऽथ तडितः परिवेषः।
उद्गमास्तसमये यदि भानोरादिशेत् प्रचुरमम्बु तदाशु।। 16।।

सूर्योदय या सूर्यास्त के समय इन्द्रधनुष (Rain Bow), प्रतिसूर्य, परिघ (आकाश में डण्डे की तरह लम्बी रेखा), बिजली, रोहित (इन्द्र धनुष का टुकड़ा), सूर्य चन्द्रमा का परिवेष दिखे तो शीघ्र ही वर्षा होती है।

Scanned with CamScanner

यदि तिर्यक्पतितैर्मेघैर्मुहुर्मुहुः प्रवर्षति च पौर्णमास्याः ।

उदयास्तसमये सविवुधौर्विमुक्तौ च वर्षति जलम् ।। 17 ।।

सूर्योदय व सूर्यास्त के समय आकाश में तीतर के पंखों के समान चित्र विचित्र रंग के बादल उठें। पौर्णमास्य प्रसन्नता से महकहायें। जब सूर्योदय के समय ये लक्षण हों तो दिन में वर्षा होती है। सूर्यास्त के समय हों तो रात में वर्षा होती है।

तीतर पंखी बादरी, विरला काजल रेख।
वह बरसे उपर करे, कहैं भड्डरी देख।। (भड्डरी)
तीतर बरनी बादरी के मेघन पर छाय।
कहे भाव सुन भड्डरी बिन बरसे नहीं जाय।। (भाव)

यद्वन्मोपकिरणाः सहस्रशोरस्तभूधरकरा इवोद्धिताः ।

भूसमं च रसते यदाम्बुदस्तन्महद्भवति वृष्टिलक्षणम् ।। 18 ।।

सूर्यास्त के समय किरणें ऊपर आकाश की ओर उठती सी दिखें तथा आकाश में बहुत बादल हों तो अतिवृष्टि होती है।

पराशर ने कहा है कि उक्त लक्षणों की बलवत्ता से खूब वर्षा व कम लक्षणों से कम वर्षा होती है। वर्षा काल में धूमकेतु दिखना, धूल बरसना, भूकम्प आना सब वर्षा के सूचक होते हैं।

बलवत्सु महद्वर्षमल्पेष्वल्पाम्बुशीकरम् ।
मध्येषु मध्यमं ब्रूयात्तिर्यगतेषु तिर्यगतवत् ।।
उल्कातिपातभूकम्पांशुवर्षाणि केतवः ।
अपसव्या ग्रहाश्चैव नित्यं वर्षासु वर्षदाः ।। (पराशर)

ग्रहयोग से वर्षा ज्ञान :

प्रावृषि शीतकरो भृगुपुत्रात् सप्तमराशिगतः शुभदृष्टः ।

सूर्यसुताब्रवपञ्चमगो वा सप्तमगश्च जलाऽऽगमनाय ।। 19 ।।

वर्षा ऋतु में शुक्र से सप्तम में जब चन्द्रमा हो तथा शुभ ग्रह देखते हों तो वर्षा होती है।

शनि से 5.7.9 राशियों में चन्द्र हो तो भी शीघ्र वर्षा होती है।

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसंक्रमे च ।

पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्राम् ।। 20 ।।

Scanned with CamScanner

ग्रह का उदय, अस्त होने पर, चन्द्रमा से समागम होने पर, शुक्रचार में कहे गए नक्षत्र मण्डलों में तारा ग्रहों के प्रवेश के समय, अमावस्या व पूर्णिमा के अन्त में, सूर्य के अयन परिवर्तन के समय, सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आए तो प्रायः (अर्थात् नियमतः नहीं) कभी-कभी वर्षा हो जाया करती है।

समागमे पतति जलं ज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्च सङ्गमे।
यमारयोः पवनहुताशजं भयं ह्यदृष्टयोरसहितयोश्च सद्ग्रहैः।। 21।।

बुध व शुक्र के योग या युति के समय, गुरु व बुध की युति के समय, वर्षा होती है।

शनि व मंगल की युति या योग अग्निभय कारक होता है। लेकिन शनि मंगल के साथ शुभग्रह हो या दृष्टि हो तो केवल हवा चलती है, अग्नि भय नहीं होता है।

अग्रतः पृष्ठतो वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बिनः।
यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव। 22।।

जब कई ग्रह एक साथ अस्त होने वाले हों। शीघ्र गति ग्रह पृष्ट से व मन्द गति ग्रह आगे होने से अस्त होते हैं। तब पृथ्वी पर अत्यधिक वर्षा होती है।

अर्थात् मन्दगति ग्रह सूर्य से आगे हों व शीघ्र गति ग्रह सूर्य से पीछे हों तथा निकट ही हों तो यह योग बनेगा।

प्रक्षिप्त दो श्लोक :

प्रविशति यदि खद्योतो जलदसमीपेषु रजनीषु।
केदारपूरमधिकं वर्षति देवस्तदा न चिरात्।। 23।।
वर्षत्यपि रटति यदा गोमायुश्च प्रदोषवेलायाम्।
सप्ताहं दुर्दिनमपि तदा पयो नात्र सन्देहः।। 24।।

यदि रात में जुगनू बादलों तक ऊँचे जाते दिखें तो शीघ्र ही धान के खेत भर जाते हैं। यदि सायंकाल में ही सियार बोलना शुरू करें तो सात दिनों तक वर्षा होती है।

ये श्लोक वराहकृत नहीं हैं। भट्टोत्पल ने इन पर टीका भी नहीं लिखी है तथा कई प्रतियों में ये नहीं मिलते हैं।

इति श्रीमहामतिवराहमिहिराचार्यकृतायां बृहत्संहितायां पं. सुरेशमिश्रकृतेऽभिनव हिन्दीभाष्ये सद्योवर्षणाध्यायोऽष्टाविंशः।। 28।।

Scanned with CamScanner